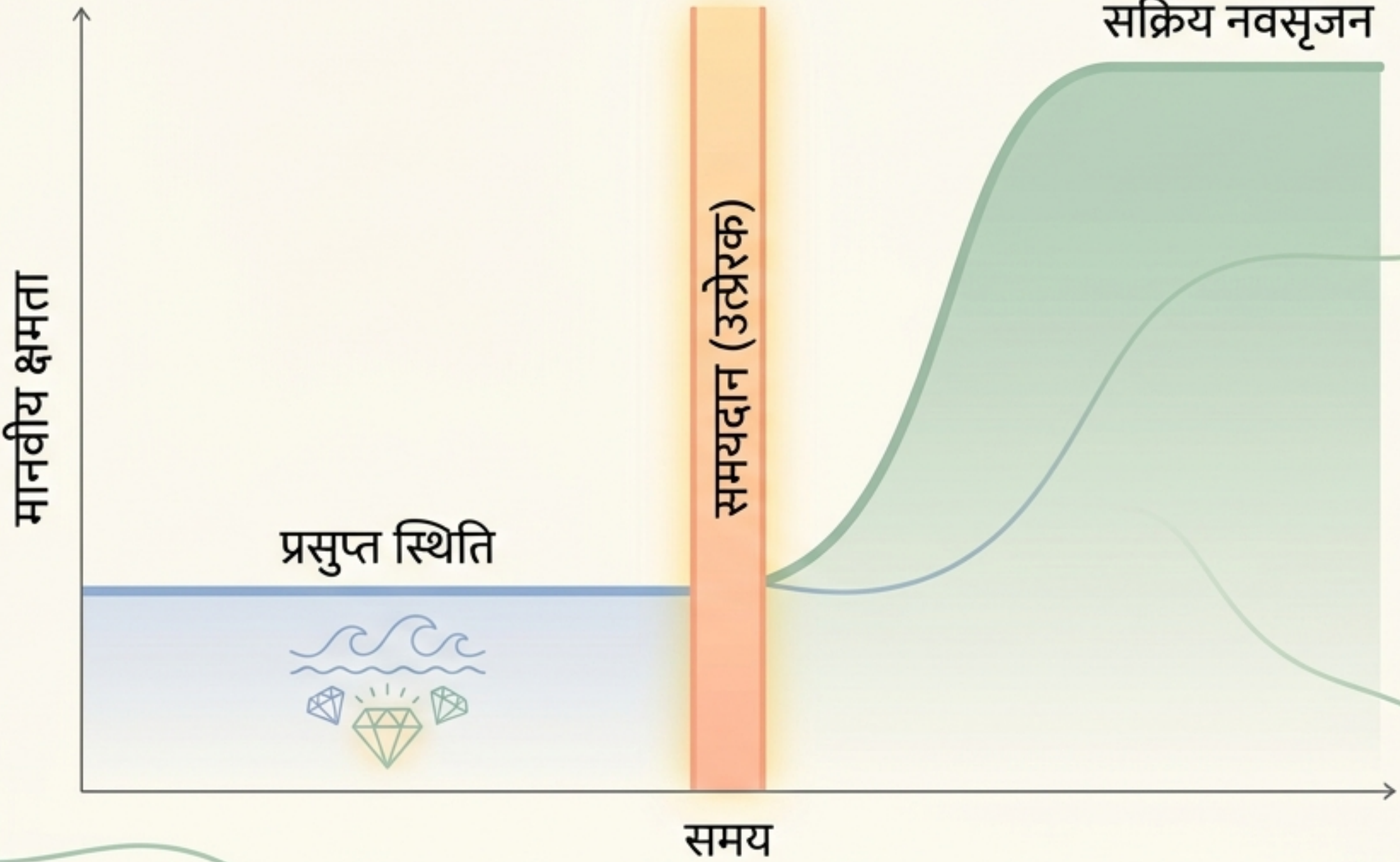


२१वीं सदी का ब्लूप्रिंट: समयदान ही युग-धर्म

मानव विकास और सामाजिक परिवर्तन की वैज्ञानिक व आध्यात्मिक कार्ययोजना
(अध्याय ८-१० पर आधारित)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



समुद्र में विपुल सम्पदा अनादि काल से छिपी पड़ी थी। मानवीय क्षमता भी प्रसुप्त है—इसे जगाने के लिए ‘समयदान’ रूपी उत्प्रेरक की आवश्यकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सामाजिक परिवर्तन का मास्टर फ्लोचार्ट



— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सृजन नोड १: सर्वसुलभ शिक्षा का विज्ञान

न्यूनतम दो अशिक्षितों को शिक्षित बनाना।
विचार परिवर्तन के लिए बिना शुल्क
घर बैठे साहित्य पहुँचाना।

“वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मो साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

[१ साक्षर व्यक्ति]

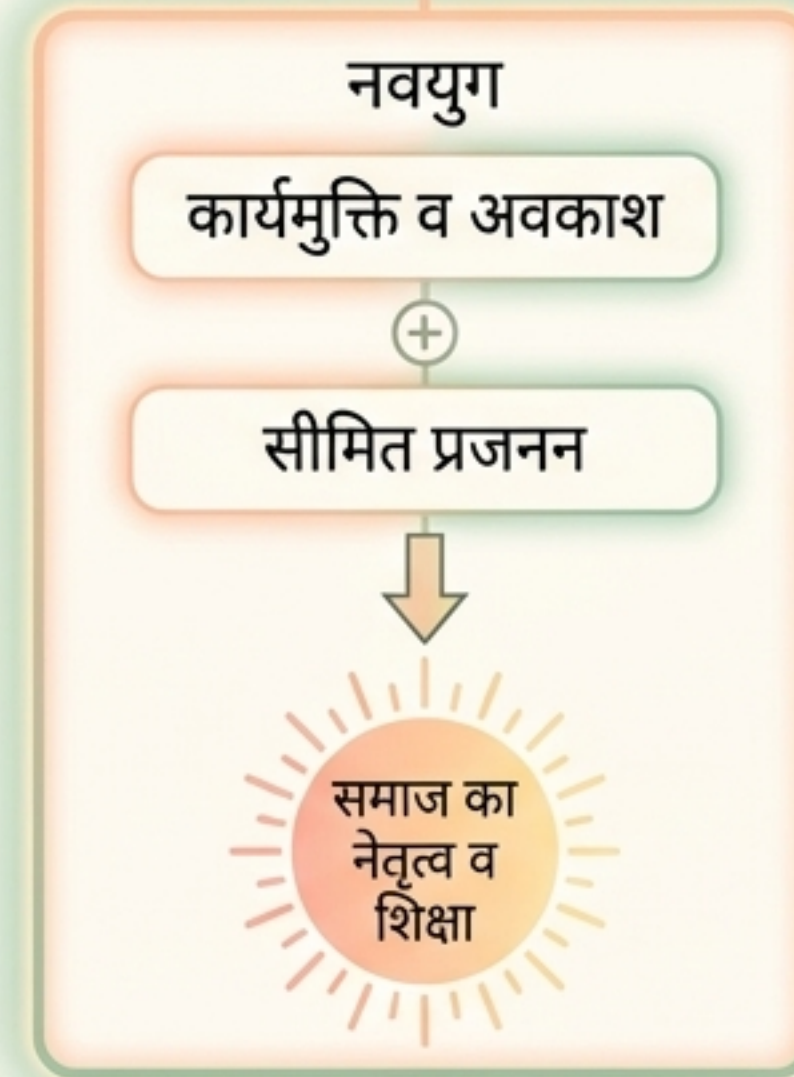
[२ निरक्षर]

[२ निरक्षर]

ज्ञान रथ + झोला पुस्तकालय =
घातांकीय संज्ञानात्मक उत्थान

सृजन नोड २: नारी जागरण का समाजशास्त्रीय प्रभाव

आधी आबादी को अवगति के गर्त से निकालकर समर्थता के सिंहासन पर बिठाना। २१वीं सदी नारी प्रधान होगी।



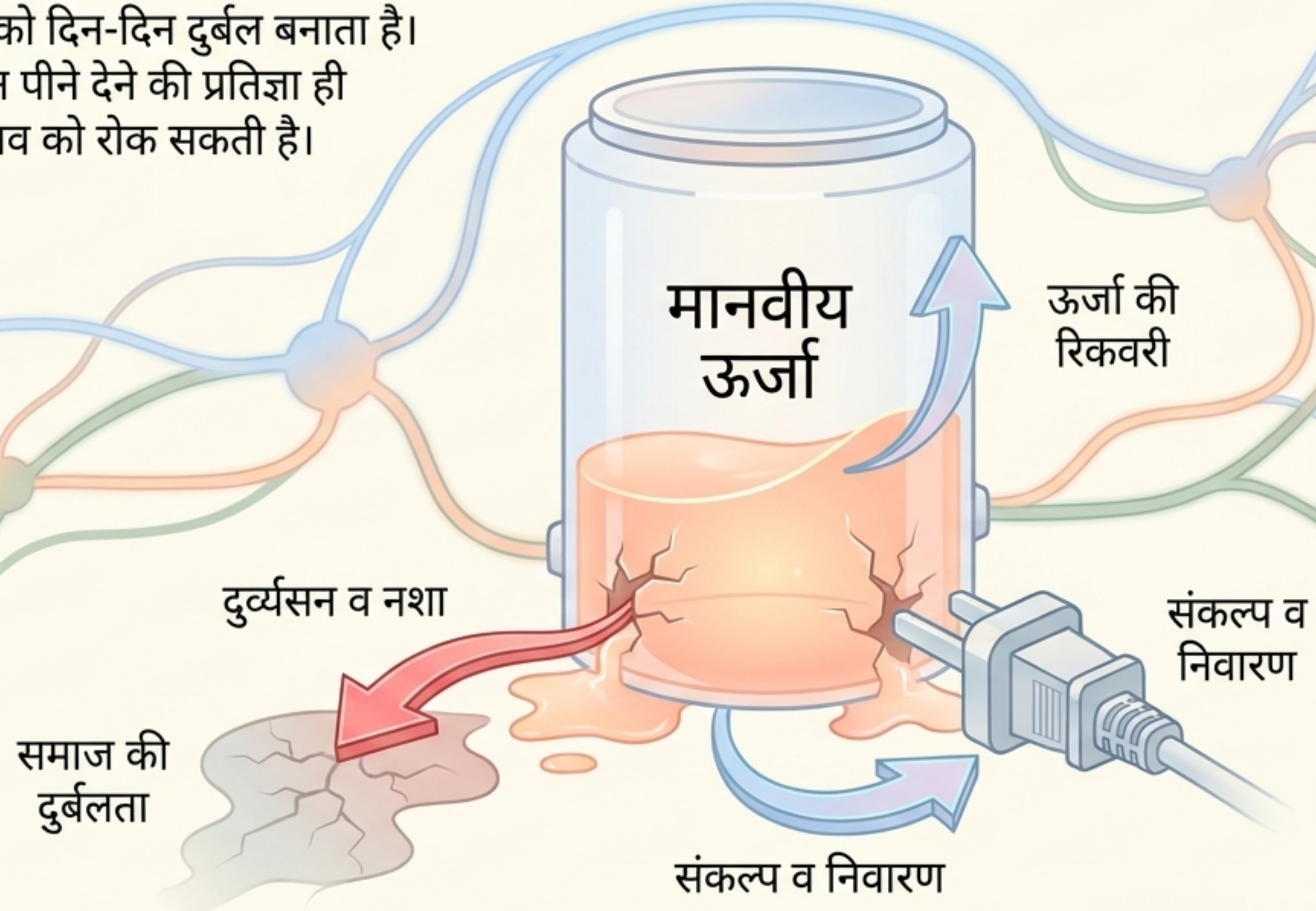
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

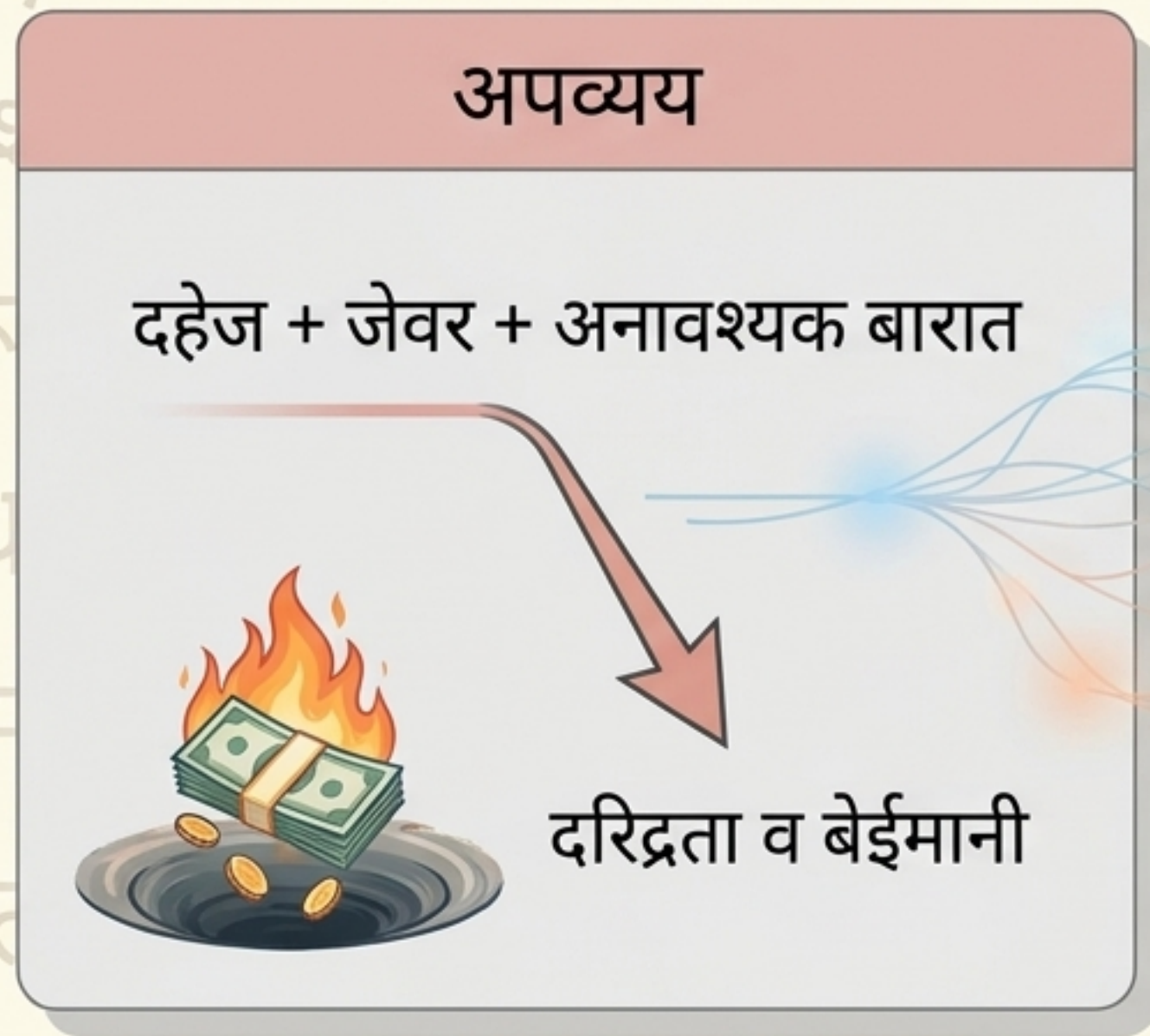
उन्मूलन नोड १: व्यसनमुक्ति और ऊर्जा संरक्षण

नशा समाज को दिन-दिन दुर्बल बनाता है।
न पीने और न पीने देने की प्रतिज्ञा ही
ऊर्जा के रिसाव को रोक सकती है।



उन्मूलन नोड २: अपव्यय का अर्थशास्त्र

खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। विवाह संहिता को बदलना अनिवार्य है।



— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वैचारिक परिष्कार का शस्त्रागार (Gyan Sharir)

६०० करोड़ मस्तिष्कों की 'ब्रेन वाशिंग' (कायाकल्प)
के लिए दृश्य और श्रव्य माध्यमों का तूफानी उपयोग।

[क्रान्तिधर्मी साहित्य]

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

दृश्य

ज्ञान रथ, झोला
पुस्तकालय

श्रव्य

टेप रिकॉर्डर,
संगीत

सामूहिक

बिना खर्च वाले
दीप यज्ञ

वैचारिक तुलना: भटकाव बनाम वास्तविक जागरण

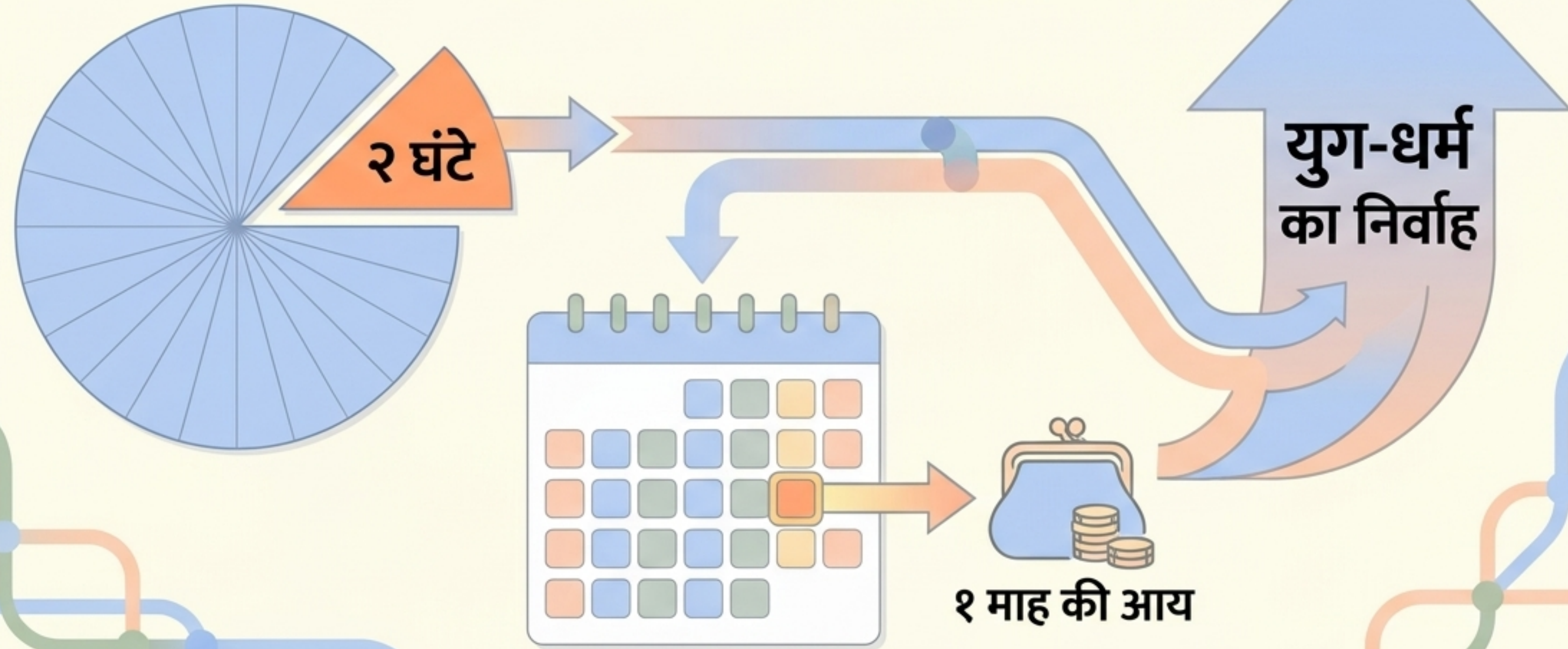
	वर्तमान भटकाव	प्रज्ञा आधारित शिक्षा
फोकस	स्वार्थ	परमार्थ
विधि	आपाधापी व बटोरना	समयदान व अंशदान
परिणाम	आस्था संकट	विवेकशीलता
सामाजिक प्रभाव	विनाश	नवसृजन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समय आवंटन का गणित

नियमित समयदान: प्रतिदिन २ घंटे।

अंशदान: माह में २९ दिन की कमाई से गुजा, १ दिन की आय का नियमित दान।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ॥ प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप ससे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा से कावेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहिता के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आध्यात्मिक पुनर्भरण: आत्मबल का रीसेट

उत्कृष्ट चिन्तन व साधना के बिना ऊर्जा क्षीण होती है।
आत्मबल संवर्धन हेतु शान्तिकुंज के
साधना सत्र अनिवार्य हैं।

आत्मबल संवर्धन
व पुनर्भरण

समाज में सेवा/क्रिया

ऊर्जा का क्षरण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में धी पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

शान्तिकुंज में साधना सत्र

९ दिन (१-९, ११-१९, २१-२९) या १ माह

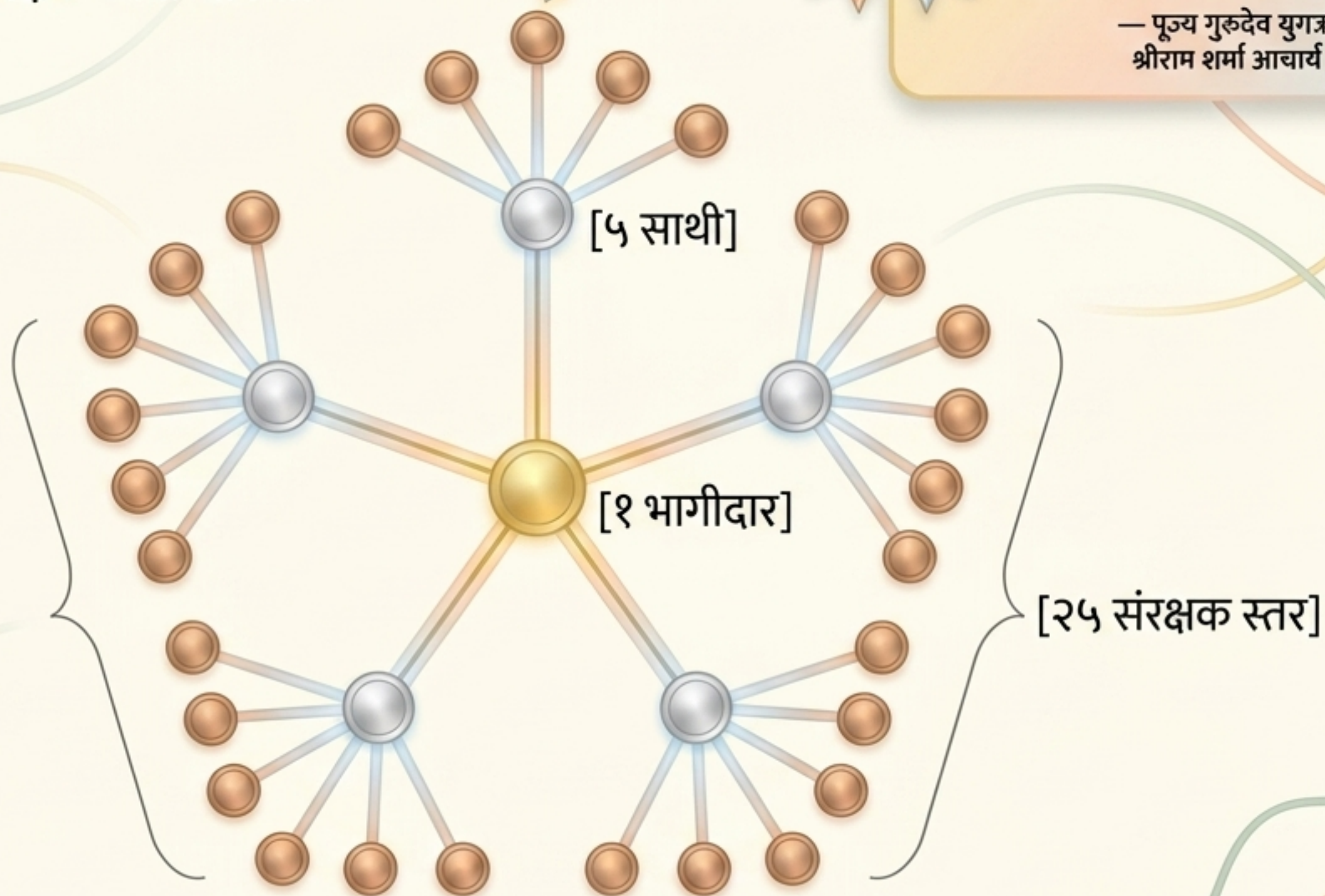
घातांकीय वृद्धि मॉडल (Viral Network)

‘एक से पाँच, पाँच से पच्चीस’ का उपक्रम।
जो २५ भागीदार बनाएगा, वह ‘संरक्षक’ गिना जाएगा।

वसन्त
पंचमी

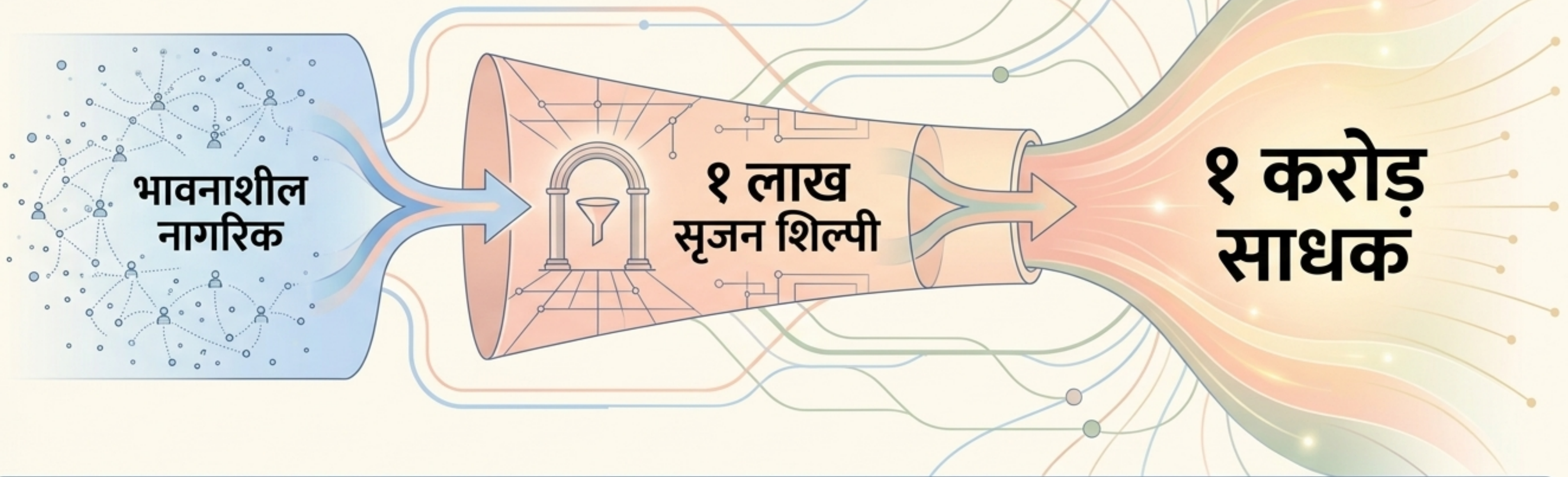
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



महाक्रान्ति का मैक्रो-स्केल फनल

युग सन्धि महापुरश्चरण की पूर्णाहुति का लक्ष्य। एक लाख शिल्पी तैयार कर, एक करोड़ साधकों की महाशक्ति खड़ी करना।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँच आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान सब बच्चों से कहियेगा कोर मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगव्रषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संश्लेषण: परिवर्तन का अदृश्य तंत्र

मनुष्य का प्रयास मात्र १% है। जो अपना पुरुषार्थ सौंपता है, उसे ९९% ईश्वरीय शक्ति का सहयोग स्वतः प्राप्त होता है।

१% मानवीय पुरुषार्थ
(समयदान)



९९% दैवी चेतना /
महाकाल की गति

अवसर की खिड़की: आज ही निर्णय लें

इतिहास का अभिनव अध्याय लिखा जा रहा है। इस उथल-पुथल में हमारा स्थान कहाँ हो, यह चयन करने का यही एकमात्र अवसर है। प्रमाद न करें।

युग
सन्धि
बेला

पंजीकरण करें:

नाम, पता, व साथियों
की सूची भेजें

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)